मानसिक एवं बौद्धिक रुप से पिछड़े बालक – एक शोध

डॉ० सुमन शर्मा
वरिष्ठ प्रवक्त्री
इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन
कादराबाद, मोदीनगर, मेरठ
Email: sumansharmaite@gmail.com

प्राप्तिः 12.02.2021
स्वीकृतः 05.03.2021

सारांश

सृष्टि के अभ्युदय से आज तक यह विशिष्टता रही है कि कोई भी दो प्राणी एक से नहीं होते। वे न तो एक सा व्यवहार करते हैं, न ही एक जैसी उनकी शिक्षा होती है। बाल विकास के अनुसार बालक को दो प्रकार का माना गया है। सामान्य बालक व विशिष्ट बालक और इस विशिष्टता के क्रम में प्रखर बुद्धि वाले बालकों से लेकर मानसिक रूप से अक्षम बालकों तक को रखा गया है। वैज्ञानिकों ने देखा कि दो बालक कभी समान नहीं होते। यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चे भी एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। सरल शब्दों में कहा जा सकता है–

"विशिष्ट बालक वह है जो उन बालकों से जो कि शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक या सामाजिक गुणों में औसत है भिन्न है।"

प्रस्तावना

सृष्टि के अभ्युदय से आज तक यह विशिष्टता रही है कि कोई भी दो प्राणी एक से नहीं होते। वे न तो एक सा व्यवहार करते हैं, न ही एक जैसी उनकी शिक्षा होती है। बाल विकास के अनुसार बालक को दो प्रकार का माना गया है। सामान्य बालक व विशिष्ट बालक और इस विशिष्टता के क्रम में प्रखर बुद्धि वाले बालकों से लेकर मानसिक रूप से अक्षम बालकों तक को रखा गया है। वैज्ञानिकों ने देखा कि दो बालक कभी समान नहीं होते। यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चे भी एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। सरल शब्दों में कहा जा सकता है–

"विशिष्ट बालक वह है जो उन बालकों से जो कि शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक या सामाजिक गुणों में औसत है भिन्न है।"

यदि एक समरूप समूह के बालकों के लक्षणों का मापन किया जाए तो उसका वितरण सामान्य वक्र के समान होगा। इसमें सामान्य वक्र के मध्य में पड़ी लम्बवत् रेखा यह बताती है कि सामान्य बालक वे हैं जो इस बिन्दु पर पड़ते हैं। हटने वाले समस्त बाल असामानय हैं। इसको इस चित्र के माध्यम से दर्शाया जा सकता है–

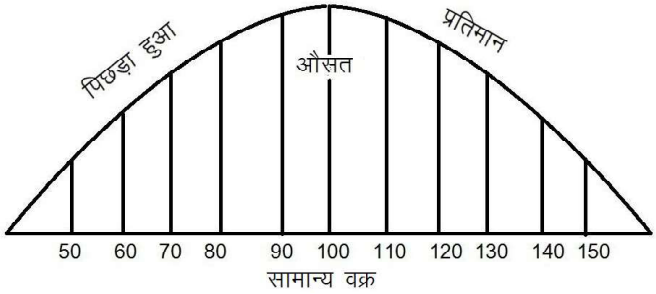

अतः सामान्य वक्र के दायें तथा बायें छोर पर पड़ने वाले 10% बालकों को औसत से भिन्न माना जा सकता है। इन 20% बालकों को विशिष्ट बालकों की संज्ञा हीं दी जाती।

सामान्य विद्यालयों में विभिन्न बुद्धि, समायोजन, रूचि, महत्वाकांक्षा, व्यक्तित्व, अभिक्षमता, उपलब्धि, चिंता आदि के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। इनकी समस्याएँ भी इन परिवर्तियों के परिप्रेक्ष्य में अलग–अलग होती हैं। किन्तु विशिष्ट बालकों जैसे– प्रतिभाशाली, मन्दबुद्धि, पिछड़ा, अधिगम निर्योग्य, दृश्टिहीन, मूक–बधिर इत्यादि की समस्याएँ सामान्य बालकों से अलग होती हैं। उनका पाठ्यक्रम भी अलग होने के साथ ही उनकी अध्यापन विधियाँ भी अलग होती हैं।

हमारे शरीर की प्रक्रिया में विभिन्न वस्तुओं के ज्ञान द्वारा विभिन्न सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। इन ज्ञान वाही वस्तुओं में एक शिरा ग्राहक तथा दूसरा संवेदी केन्द्र होता है जिनके द्वारा मस्तिष्क तक सूचनाएँ पहुँचाई जाती है। अतः विभिन्न आवश्यकता वाले बालक विभिन्न संवेदी अंगों के द्वारा विभिन्न तथ्यों को महसूस करते हैं। इन बालकों में विभिन्न संवेदनाएँ जैसे– दृष्टि, ध्वनि, घृणा, स्वाद, स्पर्श, मांसपेशी एवं शारीरिक होती है। इनके द्वारा छात्र विभिन्न तथ्यों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी ग्रहण कर सकते हैं परन्तु कभी–कभी कुछ कारणों से बालक में इन संवेदी अंगों में अपंगता आ जाती है। इस प्रकार के बालकों को विशिष्ट रूप से शिक्षा एवं सेवाएँ प्रदान करने की आवश्यकता होती है। इनमें कुछ हैं (1) श्रवण बाधित बालक, (2) बौद्धिक रूप से पिछड़ा बालक।

श्रवण बाधित बालक

श्रवण दोश अथवा सुनने के दोष का अर्थ है– बालकों के कानों द्वारा सुनने से होने वाली कठिनाईयों से है। श्रवण दोष होने पर बालक की शाब्दिक अभिव्यक्ति का विकास भी भली–भांति नहीं हो पाता, साथ ही मानसिक परिपक्वता को भी श्रवण दोष प्रभावित करता है। जिन बालकों की सुनने की क्षमता बिल्कुल नहीं होती वे अन्य बालकों की अपेक्षा गम्भीर रूप से कठिनाईयों का सामना करते हैं। तेज आवाज सुनने के लिए उन्हें श्रवण यन्त्र की आवश्यकता पड़ती है। इस साधारणतः श्रवण बाधित ये वाणी बाधित का भी दोष पाया जाता है। वह इसलिए कि जब बालक आवाज के माध्यम में किसी भी अक्षर ज्ञान को नहीं समझेगा तो वह उसका उच्चारण भी नहीं कर पाएगा। जब वह कुछ सुनेगा ही नहीं तो वह बाल भी नहीं पाएगा। बस होंठों के हिलने से

ही चाहे वह कुछ समय लें। इसलिए इन बालकों को मूक–बधिक बालक कहकर सम्बोधित किया जाता है।

श्रवण दोष के प्रकार

(1) बधिर बालक

(2) ऊँचा सुनने वाले बालक।

(1) बधिर बालक– ऐसे बालक जो जन्म से ही बहरे होते हैं और वे कुछ भी नहीं सुन सकते। इसलिए उनमें बोलने की भी शक्ति नहीं होती। कुछ बालक बोलने सीखने से पूर्व ही किसी–न–किसी कारण से सुनने की शक्ति खो बैठते हैं।

(2) ऊँचा सुनने वाले बालक– कुछ बालक ऐसे होते हैं जो ऊँचा सुनते हैं, ऐसे बालकों को श्रवण सहायक यन्त्रों की सहायता से सुनायी देता है।

(2) बौद्धिक रूप से पिछड़ा बालक– मानसिक रूप से पिछड़े बालकों को मन्द बुद्धि बालक कहा जाता है। ये बालक बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभाशाली बालकों के ठीक विपरीत होते हैं। इनकी मानसिक योग्यता औसत से कम होती है। स्किनर ने इन्हें मन्द बुद्धि (Mentally Retarded), अल्पबुद्धि (Mentally Defucip), विकल बुद्धि (Mentally Handicapped), धीमी गति से सीखने वाले (Slow Learner), पिछड़े हुए (Backward), और मूढ़ (Dull) की संज्ञा दी है। मन्द बुद्धि बालक मूढ़ (Dull) होता है, इसलिए उसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति कम होती है। **क्रो** और **क्रो** के शब्दों में, "जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, उन्हें मन्द बुद्धि बालक कहते हैं।"

ब्रिटिश मानसिक मन्दता एक्ट के अनुसार, "मानसिक मदन 18 वर्ष से पहले आन्तरिक कारणों की वजह से अथवा बीमारी या चोट के कारण पैदा हुई, एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास या तो रूक जाता है या उसमें पूर्णता नहीं आ पाती।"

लोकतांत्रिक व्यवस्था ये सभी नागरिकों को जीने और आगे बढ़ने के लिए समान अवसर प्राप्त होते हैं। शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकलांग लोग भी इसके अपवाद नहीं है। आधुनिकता इस बात को बिल्कुलन हीं मानती कि शारीरिक विकलांगता पूर्व जन्म के कर्मों की देन है। बल्कि वह इसे एक संयोग मानती है। विकलांगों को भी अन्य सामान्य लोगों की तरह सम्मान के साथ जीने का, जीवन में आगे बढ़ने का, पढ़ने–लिखने का और समाज और देश में विकास में योगदान देने का पूरा अधिकार है। खोजने पर ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे जहाँ विकलांग लोगों ने मनुष्य जाति को महान और अन्य योगदान दिया है। मेरा मानना है कि शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग (जिन्हें अब दिव्यांग कहा जाने लगा है) किसी झूठी सहानुभूति, उपेक्षा, तिरस्कार, अवमानना, अपमान और घृणा के पात्र नहीं, बल्कि ये ईश्वरीय गरीमा से युक्त संसार के आदरणीय प्राणी हैं।

मानवतावादी और मानववाद विचारधाराएँ भी इसी धारणा को प्रकट करती है। यह हम सभी का पावन कर्त्तव्य है कि हम इन्हें किसी भी दृष्टि से विकास और उन्नति के समान अवसर

प्रदान करें और उनका पूर्ण उत्साहवर्धन करें। इन्हीं सद्विचारों और सद्भावनाओं को मन में रखते हुए मुझे एक परियोजना के सिलसिले में ऐसे ही एक विद्यालय में जाने का सोभाग्य प्राप्त हुआ और मेरा वहाँ का अनुभव बहुत ही सकारात्मक, आषावान और ऊर्जावान रहा। इस विषय में आवश्यक विवरण निम्नलिखित हैं–

स्कूल का नामः– VAANI SCHOOL AND RESEARCH CENTER FOR THE DEAF AND MENTALLY RETARDED
(वाणी स्कूल एण्ड रिसर्च सेन्टर फॉर द डेफ एण्ड मेन्टली रिटारडिड)

स्थानः– PALLAVPURAM, PHASE-II ROORKEE ROAD, MEERUT
(पल्लवपुरम, फेस–2, रूड़की रोड, मेरठ)

भूमिका

वाणी स्कूल पल्लवपुरम फेस–2 में स्थापित है। यह स्कूल 700 मी० के दायरे में बना हुआ है। इस स्कूल के अन्तर्गत 16 कमरे, दो हॉल, एक एडमिनिस्टेटर हॉल है। इस स्कूल के दो स्तर है– अकादमिक और व्यवसायिक।

स्कूल के संस्थापक

वाणी स्कूल के संस्थापक श्रीमान एम०पी० जैन हैं। इन्होंने यह स्कूल 9 नवम्बर, 1997 को षुरू किया था। श्रीमान जैन आई०डी०एस० ऑफीसर सी०डी०ए० से रिटायर्ड हैं। वर्तमान में इस स्कूल में डायरेक्टर के पद पर आसीन हैं। ये कान से सुन नहीं सकते, इसी कारण से ये बोल नहीं पाते। इन्होंने अपनी भावनाओं को समझते हुए और इसी तरह के बच्चों को एक नई दिशा देने के लिए इस स्कूल का निर्माण किया। गूंगे–बहरे और मानसिक तौर से पिछड़े बच्चों के लिए जैन साहब जी ने एक नेक और पुण्य का काम किया।

प्रधानाचार्या

वाणी स्कूल की प्रधानाचार्या जी का नाम अंशु गुप्ता है। जब से यह स्कूल बना है तभी से ये इस पद पर आसीन हैं। ये अपने पद की गरिमा को बनाए हुए हैं। स्कूल का सारा प्रशासन अपनी मेहनत और ईमानदारी से सम्भाल रही हैं। जब मैं उनसे मिली तो वे मुझे सोम्यता और सादगी की साक्षात मूर्ति दिखीं। बड़ी सहजता से उन्होंने मेरी जिज्ञासाओं को शान्त किया और बताया कि बच्चा बहरा होता है गूंगा नहीं। जब वह सुनेगा ही नहीं तो बोलेगा कैसे?

प्रवेश प्रकिया

वाणी स्कूल से दाखिला फॉर्म भरवाया जाता है और इस प्रक्रिया से विद्यालय में इनका प्रवेष हो जाता है।

वित्त व्यवस्थाः–

स्कूल को किसी भी प्रकार की सरकारी वित्त सहायता नहीं है। बच्चों से फीस भी नहीं लेते। केवल दाखिला फॉर्म फीस लेते हैं। जब मैंने प्रधानाध्यापिका जी से पूछा कि आप आधारभूत आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं? तो उन्होंने बताया कि मेरठ या आस–पास के घनी वर्ग

के लोग अनुदान के रूप में धन देते हैं और वाणी स्कूल ऐमी गर्वमेन्ट है।

छात्रों की संख्या

विद्यार्थी 2016 में Hearing Impaired - 139

विद्यार्थी 2016 में			
Hearing Impaired	-		139
Mentally Challenged	-		32
Boys -	Hi	Mc	
	107	32	
Girls	62		
Total Students	-		201
Teachers			
For Hearing Imparted			
SPL Education = 24			
Speach Tharapist = 1			
For Mentally Challenged			
SPL Education	=	2	
Psychologist	=	1	

विद्यार्थी 2015 में		
Hearing Impared	-	123
Mentally Challenged	-	247

विद्यार्थी 2014 में		
Hearing Impared	-	110
Mentally Challenged	-	15

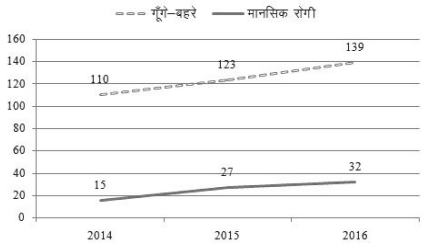

प्रशासन

श्रीमती अंशु गुप्ता ने बताया कि यह स्कूल नर्सरी से बाहरवीं कक्षा तक है। इस स्कूल में 16 कमरे, दो हॉल, एक एडमिनिस्टेटर कमरा है। इस स्कूल में 34 अध्यापिकाएं एवं अध्यापक हैं। यहाँ पर बी०एड०, एम०एड० एवं डी०एड० कोर्स चलता है। जब मैं बाहर से स्कूल की ओर आ रही थी तो मुझे वाणी स्कूल की दो इमारतें दिखाई दीं। मैंने पूछा कि ये दो दूसरी इमारत में क्या होता है। उन्होंने मुझे बताया कि एक विद्यालय को अकादमी स्तर है दूसरे का व्यवसायिक स्तर है।

अकादमी स्तर की तीन मंजिल है– पहली मंजिल पर गूंगे–बहरे बच्चों की पढ़ाई होती है। जब मैं अकादमी की दूसरी मंजिल गई तो वहाँ पर चार अध्यापिकाएँ थीं। उस समय वे बच्चों को बटरफ्लाई योगा करा रही थीं। उन्हीं बच्चों में से एक बच्चा सबसे आगे बैठकर योगा कर रहा था। उसी को देखकर पीछे बैठे बच्चे योगा कर रहे थे। बच्चों ने जब मुझे देखा तो वे दौड़कर आए और मेरे पैर छुए। एक बच्चा दौड़कर अपनी बनाई सीनरी ले आया, मुझे दीखाने लगा, वह बहुत खुश लग रहा था। तभी एक अध्यापक ने बच्चों द्वारा बनाया गया क्राफ्ट का सामान दिखाया। जैसे आईसक्रीम, झण्डा (थरमाकॉल पर) लकड़ी की चम्मच से सोफा सेट, मेज व कुर्सी, ग्रिटिंग कार्ड और लिफाफे आदि। यहीं की अध्यापिकाओं ने बताया कि इनमें से कुछ बच्चे नाच बहुत अच्छा करते हैं। कुछ बच्चों ने ब्रेक डांस, डिस्को डांस करके भी दिखाया। अध्यापिकाएं गिनती, पहाड़े व अक्षर का ज्ञान बच्चों को कराती हैं।

दूसरी मंजिल पर मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों को पढ़ाया जाता है और सबसे ऊपर बी०एड० डिप्लोमा कोर्स चलता है। व्यवसायिक स्तर पर भी तीन मंजिल का स्कूल है। इस स्कूल

में पहली मंजिल पर कम्प्यूटर लेब है जिसमें लगभग 15 कम्प्यूटर हैं। कुछ बच्चे वहाँ पर अभ्यास कर रहे थे। अनुज शर्मा उस लैब में इन्चार्ज है। उसी कमरे के सामने लाइब्रेरी थी। वह रोज नहीं खुलती थी। जब जरूरत होती थी वह तभी ही खुलती थी। ऊपर की मंजिल पर सिलाई–कढ़ाई और ब्यूटी पार्लर का कोर्स चलता है। श्रीमती यशपाल कौर सिलाई कोर्स इन्चार्ज थी। उनसे मेरी बात हुई कि जो लड़कियाँ सिलाई को सीखना चाहती हैं हम उन्हें सिखाते। पैरों से चलाने वाली मशीन का प्रयोग किया जा रहा था। श्रीमती कौर ने बताया कि इससे ये आत्मनिर्भर बनकर अपना जीवन–यापन कर सकती हैं। सामने एक बहुत बड़ा कमरा था जिसमें पार्लर कोर्स चल रहा था। तीसरी मंजिल पर लड़कियों का हॉस्टल था। वहाँ लगभग 8–10 बैड थे। वहीं पर एक किचन था। स्नान घर और कपड़े धोने की मशीन भी थी। एक्वागार्ड स्वच्छ पानी पीने के लिए लगा हुआ था। यहाँ पर बच्चे मुजफ्फरनगर, खतौली, मोदीनगर, मेरठ से आते हैं। उनके लिए निःशुल्क बस सेवा सर्विस लगी है।

षिक्षण विधिया

स्कूल में संकेत भाषा, होठों की भाषा, लेखन विधि, शारीरिक हाव–भाव व प्रदर्शन विधि का प्रयोग किया जाता है। जब मैं दसवीं कक्षा में गई तो उन्होंने खड़े होकर हाथ जोड़कर नमस्ते की। इससे पता चलता है कि यहाँ संस्कार की शिक्षा भी दी जाती है। दिन में आठ कालांश लगते हैं। साल में चार टैस्ट होते हैं। तीन टैस्ट तिमाही, छमाही और वार्षिक पेपर होते हैं। छोटे बच्चों की स्पीच क्लास भी होती है। उनके कान में लिंग्वा फोन लगाकर उनके सामने मुँह से फूंक की आवाज निकाली। बच्चों ने भी उसी तरह से किया।

मान्यता

यह स्कूल सेमी गर्वमेन्ट हैं। एन०आई०ओ०एस० से जुड़ा हुआ है, जिसका पूरा नाम National Institute Open Schooling है। प्रधानाचार्या जी ने बताया कि यह कोर्स नॉर्मल स्कूल बच्चों के लिए भी चलता है। इस स्कूल में सेण्ट्रल गर्वमेन्ट का सर्टिफिकेट दिया जाता है।

वेतन

प्रधानाचार्या जी ने बताया कि यहाँ सेमी गर्वमेन्ट होने के नाते और अनुदान पर आधारित होने के नाते वेतन ज्यादा अच्छा नहीं है। नार्म के अनुसार वेतन 3800, 6380 और 7580 है। लेकन यहाँ अध्यापिकाओं को बहुत कम वेतन मिलता है। उन्होंने बताया कि मैं यहाँ 10 साल से काम कर रही हूँ और मेरा वेतन 10000 है। इससे मुझे यह आभास हुआ कि यहाँ पर अध्यापिकाएँ निःस्वार्थ व निःशुल्क वेतन पर अपना काम पूरी निष्ठा व समपर्ण भाव से कर रही हैं।

आधारभूत आवश्यकताएँ

वाणी स्कूल मैं छात्रों की आधारभूत आवश्यकताएँ पूरी की हुई हैं। जैसे– आधुनिक शौचालय, एक्वागार्ड के पानी की व्यवस्थ, सभी कक्षाओं में बड़े श्यामपट्ट हैं। खेलकूद की गतिविधियाँ भी होती हैं। स्थापना दिवस भी मनाया जाता है। स्थापना दिवस पर ही वार्षिक महोत्सव मनाया जाता है। मेडिकल चैकअप भी कराया जाता है। बच्चों का पूरा ध्यान रखा जाता है।

वाणी स्कूल नौकरी दिलाने में भी एक अहम भूमिका निभाता है। नौकरी मेले के माध्यम से यह एक नौकरी मेले का आयोजन करता है। इसमें विषयानुसार साक्षात्कार की व्यवस्था होती। अलग–अलग कॉलेजों से विषय विशेषज्ञ आते हैं और आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित विद्यार्थियों को अपने संस्थान में नौकरी देते हैं, विज्ञापन देते हैं, इत्यादि प्रयास करते हैं। अन्त मैं यही कहूँगी कि सही मायनों में तो वाणी स्कूल मानसिक व शारीरिक विकलांग बच्चों को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1 शर्मा, डॉ0 पी0 डी0 2015, समावेशी शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2 शर्मा, श्री आर0 के0 शमार्ं 2015, राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा0 लि0, आगरा
3 ठाकुर, यतीन्द 2016 / 17, अग्रवाल पब्लिकेशन
4 शर्मा, डॉ0 नमिता, तेवतिया, डॉ0 पूनम 2016 / 17, ठाकुर पब्लिशर्स, लखनऊ